

भाषा भारती

संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी-प्रारम्भिक-पाठ्य-पुस्तक



प्रथम-वर्ग-प्रारम्भिक-पाठ्य-पुस्तक



संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी-प्रारम्भिक-पाठ्य-पुस्तक
प्रथम-वर्ग-प्रारम्भिक-पाठ्य-पुस्तक

स्मरण		
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : मूल्यों की लड़ाई में लहुलुहान आस्था	132	सी.एल. प्रभात
जीवनी		
सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक महामति प्राणनाथ	137	ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
समीक्षा		
स्मृतियों का सृजनात्मक पुनर्जन्म : नायब साहब	149	आशुतोष
रिपोर्ट		
राजभाषा प्रकोष्ठ : कदम दर कदम	155	विनोद रजक
पाठकीय	158	



सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक महामति प्राणनाथ

— बी.के. श्रीवास्तव

सामाजिक समरसता रूपी ध्वज पताका को सही मायने में एक व्यवहारिक रूप में समस्त भारत में फहराने का सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न महामति प्राणनाथ द्वारा किया गया। वे 'सर्व धर्म समभाव' एवं 'बसूधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा के महान पोषक थे। उन्होंने भारत में सामाजिक समरसता रूपी मेह की वर्षा कर अपने मूल नाम मेहराज को सार्थक किया। सत्रहवीं शदी में भारतीय समाज में सामाजिक एवं धार्मिक वैमनस्य व्याप्त था। यह वैमनस्य भारतीय समाज को अंधकार की ओर ले जा रहा था। मेहराज का जन्म इसी दौरान हुआ। उनकी जन्म कुण्डली बनाने वाले पण्डितों ने बताया कि यह कोई साधारण बालक नहीं है। यह भारत के अज्ञानरूपी अन्धकार को दूरकर ज्ञान का प्रकाश फैलायेंगे। इसीलिये इनका नाम मिहिर (सूर्य) राज रखा गया। धीरे-धीरे मिहिर राज से उनका नाम मेहराज हो गया।¹ इनके शिष्यों ने उन्हें प्राणनाथ नाम दिया। इनके सम्प्रदाय के ग्रन्थ प्रकाश हिन्दुस्तानी में बताया गया है कि उन्हें 'महामति' क्यों कहा गया-

श्री धनी जी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकुम बुध मूल बतन।

ए पाँचों मिल भई महामत, वेद कतेबों, पोहोंची सरत।।

स्वामी प्राणनाथ को परमात्मा ने अपना संकल्प, अंश, ज्योति, आवेश एवं बुद्धि प्रदान की। इन पाँच शक्तियों का समावेश होने पर उन्हें 'महामति' कहा गया।

सामाजिक समरसता के क्षेत्र में महामति प्राणनाथ ने अहम भूमिका निभाई। उनकी इस भूमिका का उल्लेख भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने इन शब्दों में किया है।

'महामति' प्राणनाथ का युग राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विघटन का काल था। सत्रहवीं शताब्दी में धर्मपारायणता धर्मान्धता में परिणित हो गई थी। धर्म में बढ़ता हुआ बाह्याचर पाखण्ड का रूप लेता जा रहा था। ऊँच-नीच तथा अस्पृश्यता की भावना जोरों पर थी। लोग स्वार्थी एवं इन्द्रिय लोलुप हो गये थे। समाज नैतिक पतन की ओर जा रहा था। ऐसे समय में महामति ने अपने व्यवहार और वाणी द्वारा धार्मिक वैमनस्य, अलगाववादी विचारधारा तथा सांप्रदायिक धर्मान्धता का सकारात्मक विरोध किया। जामनगर जैसी समृद्ध रियासत का दीवान पद त्याग कर लोगों के सामने त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।²

भारत के एक और पूर्व राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने सामाजिक समरसता के